सं श्रो.वि./भिवानी/35-84/15749.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं रामा फाईबर्ज लि॰ बामला भिवानी, के श्रमिक श्रो सत्यपाल सिंह, तथा उनके प्रकथकों के बीच इसमें इसके बाद लिखिन मामले में कोई ग्रीबोणिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट अरना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्टिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधार 1(1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हिरयाणा के राज्यपाल इसके द्वारा स्वारा श्रीधमूचना चं० 9641-1-श्रम-70/3257:, दिनांक 6 नवस्थर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रीधमूचना सं० 3864-ए.एस.घी. (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1 970 हारा उक्त ग्रीधनिय की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नोचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री तत्यपाल सिंह की सेवामी का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुकबार है ?

सं. भ्रो.वि./.यमुना/23-84/15756.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० रोशन लाल मार्फत भ्रोम प्रकाश कुन्दन लाल, जगाधरी, के श्रमिक श्री तेजू तथा के अवन्धकों के मध्य इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिणंय हैत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझसे हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गईं शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद अस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिणंय के लिए निविष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद अस्त मामला है या विवाद से मुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री तेजू की सेवाओं का सभापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./यमुना/21-84/15762.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० ग्रमरजीत मैटल इन्डस्ट्रीज वर्कस गोमती मुहल्ला, जगाधरी, के श्रमिक श्री गोर्धन तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसके बाद लिखित मामले मैं कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निदिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415—3—अम—68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495—जी—अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला व्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अच्छा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री गोर्धन की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं .को.वि./यमुना/22-84/15768.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० फरैन्डस इन्टर प्राईजिज अग्रसैन रोड, नजदीक महाराजा अग्रसैन कालेज, जगाधरी, के श्रीमक श्री गोपी राज तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, भौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शवितयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-58/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढते हुए ग्रिथिसूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

नवा श्री गोपी राज की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० भो.वि./जी , जी. एन./34-84/15774.---चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० पोली सैक्स दिल्ली रोड़, गुडगांव, के श्रमिक श्री हरी राम तंबर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है ;

धौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिष्टितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिष्ठसूचना सं. 5 415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिष्ठसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिष्ठितियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिगंय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथम संबंधित मामला है :--

क्या श्री हरि राम तंबर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो. वि./एफ. डी./56-84/15781.—-चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं. राम सरन धानी राम, 6 एनं ग्राई. टी., फरीदाबाद, के श्रमिक श्री चमन लाल ग्रोबराय तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीबोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यताल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का श्रोग करने हुए हरियाणा के राज्यशाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के श्रधीन श्रीद्योगिक श्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे निर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रबन्धकों के मच्य ग्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या भी चमन लाल ग्रोब राय की सेत्राग्रों का समापन न्याबोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० मो.वि./पानी./72-83/15788.—-चूंकि राज्यपाल हरियाणा की राय है कि मै० फाईन दिनि शर्ज देवी मन्दिर रोड़, पानीपत, के श्रीमक श्री वीरबल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है:

ग्रीर पूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रीबोगिक विवाद शिक्षिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई मिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उकत श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन श्रीबोगिक श्रिक्षकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे निर्दिष्ट विचादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित सामले श्रीमक तथा प्रबन्धकों के क्रिय न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री बीरबल की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है? दिनांक 24 मई, 1984

सं श्रो. व./भिवानी/22-84/15826. चूं हि हिरयाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. रामा फाईवर्ज लि. बामला (भिवानी), के श्रमिक श्री विशन पाल तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है ;

इस लिए, मब, मौद्योगिक विवाद मिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई कित्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.म्रो.-(ई)-श्रम-70, दिनाँक 8 मई, 1970 द्वारा उक्ते अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालाय रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबन्धित मामला है:—

क्या श्री विशन पाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

श्रम विभाग

ग्रादेश/शृद्धि पत

दिनांक 25 फरवरी, 1984

सं० ग्रो०वि०/एफ.डी/11-84/16083.—हरियाणा सरकार की ग्रधिसूचना सं०ग्रो०वि०/एफ.डी./11-84/9139, दिनांक 2 मार्च, 1984 जो कि हरियाणा सरकार के राज्य पत्रिका साधारण दिनांक 20 मार्च, 1984 के पृष्ठ 281 में छपी है, में श्रमिक का नाम ''रण सिंह" की बजाए ''राम सिंह" पढ़ा जाए।

एस० के० महेश्वरी,

संयुक्त सचित्र, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग ।

राजस्व विभाग

युद्ध जागीर

दिनांक 25 मार्च, 1984

कमांक 496-ज-(I)-84/11446 --पूर्वी पंजाब युद्ध पुरुस्कार ग्रिधिनियम, 1948 (जैसा कि उसे हरियाणा राज्य में ध्रपनाया गया है ग्रीर उसमें ग्राज तक संशोधन किया गया है) की धारा 2(ए) (1) तथा 3(1) के ग्रनुसार सौंपे गये ग्रिधिकारों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल, श्री कमें सिंह, पुत्र श्री गन्डा सिंह, रेलबे स्टेशन बराड़ा, तहसील व जिला श्रम्बाला, को रबी, 1977 से खरीफ, 1979 तक 150 रुपये वार्षिक तथा रबी, 1980 से 300 रुपये वार्षिक कीमत की युद्ध जागीर, समद में दी गई शतों के ग्रनुसार सहर्ष प्रदान करते हैं।

टी. ग्रार. तुली,

ग्रवर सचिव, हरियाणा सरकार, राजस्व विभाग ।

FORESTS DEPARTMENT

In partial modification of para I of the notification dated 22nd November, 1983 issued,—vide this department letter No, 4731-Ft-II-83/16197, (pertaining to the appointment of Shri M. S. Vaid, I. F. S.), the Governor of Haryana is pleased to order that the words "with effect from Ist November, 1983" would be inserted and read therein in place of the words "with immediate effect used in it already".

G. L. BAILUR,

Financial Commissioner and Secretary to Government, Haryana, Forests Department.

Chandigarh, dated the 7th April, 1984.